मनोविज्ञान विभाग में स्वच्छता पखवाड़ा शुरू, पहले दिन स्वच्छता के महत्व पर हुई चर्चा

हैबिट में शामिल करें स्वच्छता, स्वच्छ बनेगा

प्रदूषण देश की बड़ी समस्या के रूप में सामने आ रही है। इससे लोगों के सेहत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। प्रदूषण का प्रमुख कारण स्वच्छता का अभाव और उसके प्रति जागरूकता की कमी होना है। विद्यार्थियों को स्वच्छता के प्रति प्रेरित करने पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस मौके पर विभाग के एचओडी प्रोफेसर डॉ. प्रियवंदा श्रीवास्ताव और डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन के एचओडी प्रोफेसर डॉ. बशीर हसन उपस्थित थे।

गांव, घर और मोहल्ले में कचरे और अवशिष्ट पदार्थों का उचित निस्तारण होने से स्वच्छता आती

रायपुर• उन्होंने मनोविज्ञान के छात्र-छात्राओं को स्वच्छता को अपनी आदतों में शामिल करने की अपील की। स्वच्छता विचारों को प्रभावित करती है। डॉ. हसन ने बताया कि अपने गांव, घर, मोहल्ले में कचरे और अवशिष्ट पदार्थों का उचित निस्तारण होने से स्वच्छता आती है और कई प्रकार की बीमारियां नहीं होती। यही वजह है कि देशभर में व्यापक स्तर पर स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। सांस्कृतिक परिवेश में भी साफ-सफाई की अहम भूमिका है।

इस अभियान में छात्र-छात्राओं को भी अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए। कार्यक्रम में मनोविज्ञान के विद्यार्थियों ने स्वच्छता बनाने और दूसरों को भी जागरूक करने का शपथ लिया। इसमें एमए प्रीवियस, एमए अंतिम,पीजीसी और शोध के छात्र-छात्राओं सहित मनोविज्ञान विभाग के अन्य स्टॉफ शामिल थे।

विचारों में आती है सकारात्मकता

विभाग की एचओडी डॉ. श्रीवास्तव ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि साफ-सुथरा माहौल हमारे विचारों को काफी प्रभावित करता है। घर हो या मोहल्ला कचरा और गंदगी से मुक्त रहता है, तो सकारात्मक विचार आते हैं।और रचनात्मक कार्यों में मन लगता है। दूसरी ओर गंदगी और साफ-सफाई नहीं होने से बीमारियों के अलावा व्यक्ति मानसिक तौर पर भी अस्वस्थ होने लगता है।

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत यह कार्यक्रम होंगे

- सफाई के महत्व पर चर्चा
- स्वच्छता बनाने छात्र-छात्राओं का शपथ
- विद्यार्थियों और स्टॉफ के लिए स्वच्छता कार्यक्रम बनाना
- आसपास साफ-सफाई के लिए श्रमदान
- स्वच्छता पर वाद-विवाद
- स्वच्छता की जिम्मेदारी पर सेमीनार का आयोजन